एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 02, अंक: 04 (जुलाई-अगस्त, 2022)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

कैसे करें नया बाग लगाने की तैयारी

(*विनीता राजपूत, देवेंद्र सिंह जाखड़ एवं रेणू देवी)
ज़िला विस्तार विशेषज्ञ, कृषि विज्ञान केंद्र, सिरसा (चौधरी चरण सिंह कृषि विश्वविध्यालय, हिसार)
संवादी लेखक का ईमेल पता: vinitarajput360@gmail.com

आज के दौर में किसानों की आय दोगुनी करने पर ज़ोर दिया जा रहा है, और यह तभी सम्भव है, जब किसान पारम्परिक फसलों की खेती से बाहर निकलकर फसल विविधिकरण को अपनाएँ। फसल विविधीकरण विभिन्न कृषि उत्पादों की कीमत में उतार-चढ़ाव को बेहतर ढंग से वहन कर सकता है और यह कृषि उत्पादों की आर्थिक स्थिरता सुनिश्चित करने में सहायक हो सकता है। फसल विविधिकरण के लिए बाग़वानी फसलें सबसे बेहतर विकल्प हैं। किसानों का रुझान भी बाग़वानी फसलों की ओर बढ़ रहा है, जिसकी मुख्य वजह है बाग़वानी फसलों से मिलने वाला अधिक उत्पादन एवं अच्छे दाम।

फलदार पौधों का बाग लगाने के लिए किसान को दूरदर्शी होना चाहिए, जिसके लिए सोच समझकर बनायी गयी योजना की आवश्यकता होती है। चूँकि एक बार बाग लगाने के बाद कम से कम 15-20 साल तक पौधे फल देते हैं और बाग लगाते समय की गयी ग़लतियों को बाद में ठीक कर पाना बहुत कठिन होता है। उचित तकनीक के अभाव में पौधों की आयु व उत्पादन कम हो जाता है। इसीलिए बाग की योजना बनाते समय प्रत्येक बिंदु चाहे वो पौधे की क़िस्म हो, मिट्टी-पानी की जाँच हो या फिर बाग का रख-रखाव, सभी पर भलीभाँति विचार करना चाहिए।

किन बातों का रखें विशेष ख़याल ?

1. खेत का चुनाव

ऐसे खेत का चुनाव करें जहाँ पर जमीन में पत्थर और चूने की परत न हो। मिट्टी व पानी की जांच कराएँ। मिट्टी का नमूना जांच के लिए इस तरह से इकट्ठा करें कि वह आसपास के पांच एकड़ का प्रतिनिधित्व करें। अधिकांश फलदार पौधों के लिए मीठे पानी की आवश्यकता होती है क्योंकि फलदार पौधे पानी में अधिक लवणों को सहन नहीं कर पाते हैं। हालांकि कुछ फल जैसे बेर, आंवला, अमरूद, खजूर इत्यादि पानी व मिट्टी में विद्यमान लवणों की मात्रा को सहन कर सकते हैं। अतः बाग लगाने से पहले मीठे पानी या नहरी पानी की उपलब्धता सुनिश्चित कर लें। यदि खेत में नहर के पानी की उपलब्धता माह में एक या दो

बार हैं तो खेत में तालाब बनाकर नहर के पानी का संचयन अवश्य करें, जिसका प्रयोग टपका विधि द्वारा सिंचाई के लिए किया जा सकता है।

2. जमीन की तैयारी

जमीन पर घास व झाड़ियों को भलिभांति ट्रैक्टर द्वारा 1-2 गहरी जुताई करके साफ़ करें। जमीन को एक समान करने के बाद ही उसमें पौधे लगाने के लिए निशान लगाए जाते हैं। खेत में पहले हरी खाद वाली फसलें जैसे ढैंचा, ग्वार, मूंग इत्यादि बीजकर उन्हें फूल आने से पहले हैरो की मदद से जमीन में मिलवा देना चाहिए। इससे मिट्टी की उर्वरता व भौतिक स्थिति में सुधार आता है।

3. गड्ढ़ों के लिए निशानदेही करना

खेत में पौधे लगाने से पहले जमीन के अनुसार नक्शा तैयार करें व उसी के अनुसार निशान लगाएँ। गड्ढे के लिए निशान लगाने के समय, खेत में ट्रैक्टर व अन्य उपकरणों के आवागमन के लिए स्थान अवश्य रखें। आम तौर पर बाग लगाने के लिए दो प्रकार की प्रणाली प्रसिद्ध हैं, जिनमें से एक है- स्क्वेर सिस्टम। स्क्वेयर सिस्टम में बाग में सभी पौधों की आपस में दूरी बराबर होती है। इस प्रणाली में बाग में निराई-गुड़ाई करना व उपकरणों को एक जगह से दूसरी जगह ले जाना आसान होता है। इस सिस्टम में सबसे अधिक पौधे लगाए जा सकते हैं।

दूसरा सबसे प्रचलित सिस्टम है रेक्टैंगुलर सिस्टम। इस सिस्टम में पौधे से पौधे की दूरी और प्रत्येक लाइन की दूरी बराबर होती है। इस सिस्टम में बाग के बीच में दूसरी फसल (सब्जियां, मूंग, अन्य काम ऊंचाई वाली फल वर्गीय फसलें) को उगाना आसान होता है, जोकि किसान को अतिरिक्त आय प्रदान करती हैं। अधिकतर फलदार पौधों के बीच की दूरी 5 मीटर x 5 मीटर या 6 मीटर x 6 मीटर रखी जाती है।

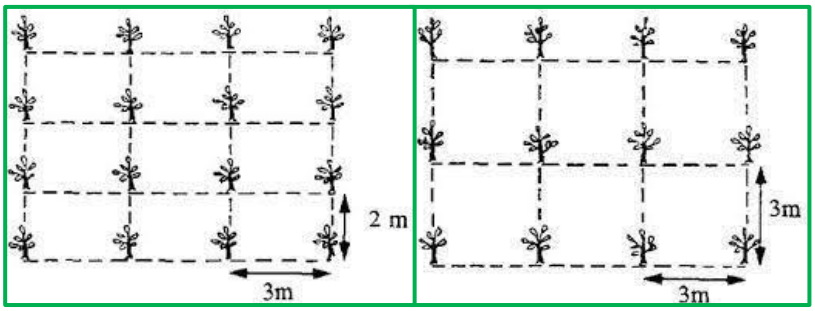

हालांकि सघन खेती में यह दूरी 3 मीटर x 3 मीटर तक कम भी की जा सकती है।

4. गड्ढों की खुदाई व भराई

निशानदेही के बाद खूँटे वाली जगह पर गड्ढों की खुदाई की जाती है। गड्ढों की गहराई लगभग 1-1.5 मीटर रखी जाती है। परंतु पपीता, अनार व केला जैसी फसलों के लिए 60 सेंटीमीटर गहरायी वाला गड्ढा भी पर्याप्त होता है। गड्ढे से ऊपर की 30 सेंटीमीटर तक की मिट्टी को निकालकर एक तरफ़ रखा जाता है, जिसको बाद में गड्ढा भरने में प्रयोग लाया जाता है, चूँकि इसे उर्वरक माना जाता है। शेष मिट्टी को हटा दिया जाता है व इसके स्थान पर गोबर की खाद, केंचुआ खाद व उचित मात्रा में NPK मिलाया जाता है।

गड्ढों की खुदाई का सबसे उपयुक्त समय मई-जून है। खुदाई के बाद गड्ढों को कम से कम 15-20 दिनों के लिए तेज धूप में खुला रखना चाहिए, ताकि मिट्टी में उपस्थित कीटाणुओं व कीटों को नष्ट किया जा सके।
गड्ढों में भलिभाँति धूप लगने के बाद उनको बचाई हुई मिट्टी, गोबरखाद, केंचुआ खाद व NPK के मिश्रण से भरा जाता है। प्रत्येक गड्ढे में 15 मिली लीटर क्लोरोपायरीफ़ोस 20 EC व 15-20 ग्राम बावस्टिन मिट्टी में मिला कर डालना चाहिए, इससे जड़ गलन जैसी बीमारियों, चींटियों व दीमक से पौधों को बचाया जा सकता है। भरे हुए गड्ढों को कुछ दिनों के लिए पानी दे कर छोड़ दिया जाता है ताकि मिट्टी भलिभाँति बैठ जाए व गड्ढों में हवा ना रह जाये।

5. पौधों की रोपाई

भरे हुए गड्ढों में पौधे की गाची जितनी जगह बना कर सावधानी से पौधे को लगाना चाहिए ताकि जड़ों को नुक़सान ना पहुँचे। फिर मिट्टी को अच्छे से दबा कर हल्का पानी देना चाहिए।

6. पौधे लगाने के बाद बाग का रख-रखाव

आवश्यकतानुसार नए पौधे लगाने के बाद बांस, लकड़ी या तार से पौधे को सहारा देने का प्रबंध करें। रोगी व झुकी हुई टहनी को सावधानी से समय-समय पर काटते रहें। गर्मी व सर्दी से पौधों को बचाते रहें। अगर पौधों में दीमक लगी हो तो दवाई डालकर सिंचाई करें। नए लगाए गए पौधों में अगर पैबंदी से नीचे मूलवृंत पर बढ़वार आती है, तो उसे समय-समय पर काटते रहें। इन पौधों में एक वर्ष तक खाद ना डालें। नए बाग में पौधों का तेज हवा, गर्मी, व ओला वृष्टि से बचाव करना अतिआवश्यक होता है। यदि कोई पौधा किसी कारणवश सूख जाए तो उसकी जगह उपयुक्त समय पर दूसरा पौधा लगा देना चाहिए।

एक सफल बाग लगाने के लिए विशेष ट्रेनिंग व जानकारी आवश्यक है। इस प्रकार पूरी जानकारी के साथ लगाए गए बाग में पौधों का स्वास्थ्य बेहतर होता है व उनकी देखभाल भी अच्छे से हो पाती है।

क्या करें?

- नया बाग लगाने से पहले अपने नज़दीकी कृषि विज्ञान केंद्र या किसी कृषि कार्यालय से पूरी जानकारी प्राप्त करें। यदि कोई ट्रेनिंग कोर्स उपलब्ध हो तो, अवश्य ही इसमें भाग लें।
- जो किसान पहले से ही बाग़वानी कर रहे हैं, उनसे मिल कर उनके अनुभवों से सीखने का प्रयास करें।
- फल की जिस क़िस्म को लेकर आपने प्लान बनाया है, उसी क़िस्म के अच्छी गुणवत्ता वाले पौधे प्रमाणित नर्सरी से ख़रीदें।
- पौधे ख़रीदते समय यह ज़रूर सुनिश्चित करें कि पौधा क़लमी है या बीजू।
- यदि क़लमी पौधा है तो उसका मूलवृंत कौन सा है, यह पता अवश्य करें।
- समय-समय पर कृषि या बाग़वानी विशेषज्ञ की सलाह के लिए उनसे सम्पर्क करते रहें।

क्या ना करें?

- हर किसी की बतायी गयी जानकारी पर आँखे मूँद कर विश्वास ना करें।
- सस्ते दामों के चक्कर में नए पौधे किसी भी अप्रमाणित नर्सरी से ना लें।
- यदि पहले कभी भी बाग नहीं लगाया हो तो, अनावश्यक रूप से नयी दवाओं व खाद पर प्रयोग ना करें।
- पौधों के बीच में निर्धारित दूरी रखें, जिससे पौधों का विकास भलिभाँति हो सके।